Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 22, Issue No. 5, October-2025, ISSN 2230-7540

DOI: https://doi.org/10.29070/xenzxb08

Check for updates

सर्वोदय: सब के कल्याण का गांधीवादी दर्शन

श्रीमति रिंकी अग्रवाल [1] *

1. असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग), राजकीय महाविद्यालय गोवर्धन, मथुरा (उ.प्र.), भारत
rinkiagarwal7@gmail.com

सारांश: महात्मा गांधी के समय में भारत में समाज जाति,वर्ग और विषमता से ग्रस्त था। धन कुछ लोगों के हाथों में केंद्रित था और गरीब और श्रमिक ऐसे वर्ग थे जो हमेशा से शोषित रहे। ऐसे में गांधी जी ने महसूस किया कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता पर्याप्त नहीं है जब तक समाज में समानता,प्रेम और सहयोग की भावना नहीं आती। यही कारण था कि गांधी जी ने यह माना कि यदि असमानता को समाप्त करना है तो सर्वोदय- यानी सभी का विकास आवश्यक था। वर्तमान में जहां वसुधैव कुटुंबकम , प्राचीन ज्ञान परंपरा जैसी विचारधारा को लागू करने पर बल दिया जा रहा है वहां गांधी जी के सर्वोदय की विचारधारा को पढ़ना और लागू करना उतना ही प्रासंगिक है जितना बसुधैव कुटुंबकम और प्राचीन ज्ञान परंपरा की संकल्पना को पुनर्जीवित रखना। यह शोध पत्र महात्मा गांधी के सर्वोदय की विचारधारा वर्तमान में कितनी प्रासंगिक है और कैसे यह विचारधारा हमारी वसुधैव कुटुम्बकम , प्राचीन ज्ञान परंपरा को जीवित रखती है और सभी के कल्याण की बात करती है , यह बताने का प्रयास किया गया है। महात्मा गांधी का जीवन केवल एक राजनीतिक आंदोलन का प्रतीक नहीं था वरन वह मानवता, सत्य और हिंसा के मूल्यों पर आधारित एक व्यापक जीवन दर्शन के प्रवर्तक थे। इसी दर्शन का सर्वश्रेष्ठ रुप सर्वोदय में परिलक्षित होता है जिसका अर्थ है सबका उदय या सबका कल्याण। सर्वोदय गांधी जी के उस आदर्श समाज की कल्पना है, जहां व्यक्ति समाज और प्रकृति तीनों के मध्य संतुलन स्थापित हो सके।

मुख्य शब्द: सर्वोदय, बसुधैव कुटुंबकम, unto this last, ट्रस्टीसिप

---------- X ----------

परिचय

सर्वोदय शब्द संस्कृत के दो शब्दों से बना है-सर्व अर्थात सबका और 'उदय' अर्थात उत्थान या कल्याण। इस प्रकार सर्वोदय का अर्थ है- "सबका उत्थान या सबका भला।" गांधी जी ने यह शब्द पहली बार अंग्रेज लेखक जॉन रस्किन की पुस्तक Unto This Last के गुजराती अनुवाद के लिए प्रयोग किया था। उन्होंने इस पुस्तक से प्रेरणा लेकर इस पुस्तक का सार तैयार किया था जो सर्वोदय के नाम से प्रकाशित हुआ ।इस पुस्तक के विषय में गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है," इस पुस्तक को हाथ में लेकर मैं छोड़ ही नहीं सका। उसने मुझे पकड़ लिया।.....ट्रेन शाम को डरबन पहुंचनी थी ।पहुंचने के बाद मुझे सारी रात नींद नहीं आई । पुस्तक में प्रकट किये हुए विचारों को अमल में लाने का इरादा किया।..... मेरा यह विश्वास है कि जो चीज मुझमें गहराई से भरी हुई थी, उसका स्पष्ट प्रतिबिम्ब मैंने रस्किन के इस ग्रंथ रत्न में देखा।" उस पुस्तक को पढ़कर गांधी जी रात भर सो नहीं सके। उससे तीन बातें उनके सामने आईं-

1. सबकी भलाई में हमारी भलाई निहित है।

2. आजीविका का अधिकार सबको एक समान है।

3. सादा,मेहनत-मजदूरी का, किसान का,जीवन ही सच्चा जीवन है।

गांधी जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है –"पहली चीज मैं जानता था। दूसरी को मैं धुंधले रूप में देखता था। तीसरी का मैंने कभी विचार ही नहीं किया था। इस पुस्तक ने मुझे दीये की तरह दिखा दिया की पहली चीज में दूसरी दोनों चीज समाई हुई हैं। सवेरा हुआ और मैं इन सिद्धांतों का अमल करने में लग गया ।गांधी जी की मृत्यु के बाद विनोबा भावे ने सर्वोदय को व्यावहारिक रूप देने का प्रयास किया। उन्होंने लोगों से भूदान(स्वेच्छा से भूमि दान) की अपील की ताकि भूमिहीनों को जमीन मिल सके। बाद में यह आंदोलन ग्रामदान (पूरा गांव दान) में परिवर्तित हुआ।उसके बाद जयप्रकाश नारायण ने सर्वोदय आंदोलन को राजनीतिक और सामाजिक क्रांति से जोड़ा। उन्होंने संपूर्ण क्रांति का नारा दिया जिसमें राजनीतिक,आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक सभी परिवर्तन शामिल थे।उसके बाद के चरण में सर्वोदय दर्शन का अंतर्राष्ट्रीय और शैक्षिक रूप विकसित हुआ। कई गांधीवादी संस्थानों जैसे सेवाग्राम, गांधी स्मृति, भारत सर्वोदय समाज ने इसे आगे बढ़ाया।

गांधीजी ने सर्वोदय के अपने इस विचार को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन का केंद्र बना लिया। महात्मा गांधी का सर्वोदय का दर्शन केवल एक सामाजिक सिद्धांत ही नहीं वरन मानवता का सार्वभौमिक संदेश है ।यह बताता है कि सच्चा विकास तभी संभव है जब समाज के अंतिम व्यक्ति तक सुख पहुंचे। महात्मा गांधी के अनुसार- "सर्वोदय का अर्थ है- सबका भला, परंतु शुरुआत हमेशा सबसे अंतिम व्यक्ति से होनी चाहिए।" गांधी जी का मानना था कि समाज का कल्याण कुछ लोगों की समृद्धि से नहीं बल्कि सबके समान विकास से संभव है। उनके सर्वोदय की विचारधारा के निम्नलिखित केंद्र बिंदु थे-

1. सभी वर्गों का समान उत्थान,चाहे वे अमीर हो या गरीब

2.अहिंसक समाज की स्थापना,जहां प्रेम,सहयोग और करुणा हो।

3.ट्रस्टीशिप का सिद्धांत जिसके अनुसार संपन्न व्यक्ति अपनी संपत्ति को समाज की सेवा में लगाये।

4. श्रम की प्रतिष्ठा और आत्मनिर्भरता जिससे हर व्यक्ति सम्मान पूर्वक जीवन यापन कर सके ।

महात्मा गांधी ने सर्वोदय को अपने जीवन और चिंतन का प्रमुख आदर्श माना ।उन्होंने कहा कि समाज का विकास तभी सच्चा विकास कहलाएगा जब उसमें सभी वर्गों- अमीर, गरीब, स्त्री, पुरुष,किसान, मजदूर का समान कल्याण हो। गांधी जी का विश्वास था कि किसी भी व्यवस्था का उद्देश्य केवल कुछ लोगों का सुख नहीं बल्कि संपूर्ण समाज का नैतिक,आर्थिक और आध्यात्मिक उत्थान होना चाहिए।

सर्वोदय का यथार्थवादी स्वरूप

सर्वोदय दर्शन केवल आदर्शवादी कल्पना नहीं है। यह व्यक्ति, समाज और राज्य — तीनों के स्तर पर ठोस परिवर्तन का आह्वान करता है:

1. व्यक्तिगत स्तर पर: आत्मसंयम, सत्य, अहिंसा और ट्रस्टीशिप का अभ्यास।

2. सामाजिक स्तर पर: वर्ग-संघर्ष के स्थान पर सहयोग और सामूहिक श्रम (Shramadana), तथा ग्राम स्वराज्य का निर्माण।

3. राजनीतिक स्तर पर: विकेन्द्रित लोकतंत्र, नैतिक शासन, और जनसहभागिता पर आधारित व्यवस्था।

आधुनिक सन्दर्भ में सर्वोदय

डिजिटल युग और वैश्वीकरण के समय में सर्वोदय का अर्थ केवल आर्थिक नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन से भी जुड़ा है।

आज "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास" — यह नारा भी सर्वोदय की भावना को ही दर्शाता है।

सर्वोदय का लक्ष्य है

ऐसा समाज बनाना जिसमें प्रत्येक व्यक्ति का समान रूप से कल्याण हो, किसी का शोषण न हो, और सबको सम्मानपूर्वक जीवन जीने का अवसर

सर्वोदय के प्रमुख तत्व

1. समानता (Equality) — सभी के लिए समान अवसर।

2. अहिंसा (Non-violence) — समाज में शांति और प्रेम का मार्ग।

3. सत्य (Truth) — जीवन का नैतिक आधार।

4. स्वावलंबन (Self-reliance) — आत्मनिर्भर ग्राम व्यवस्था।

5. ट्रस्टीशिप (Trusteeship) — धनवान व्यक्ति समाज के हित के लिए अपनी संपत्ति को ईश्वर की अमानत समझे।

6. अंत्योदय (Welfare of the last person) — सबसे गरीब, कमजोर और वंचित व्यक्ति का कल्याण सर्वोपरि है।

सर्वोदय समाज की विशेषताएँ

1.वर्गहीन और शोषणमुक्त समाज।

2.आर्थिक समानता और ग्राम स्वराज।

3.श्रम की गरिमा।

4.प्रेम, सहयोग और करुणा पर आधारित संबंध।

5.शिक्षा, नैतिकता और सेवा पर बल

सर्वोदय आंदोलन का प्रभाव

1. सामाजिक क्षेत्र में प्रभाव- सर्वोदय आंदोलन ने जाति, धर्म,वर्ग भेद मिटाने का सशक्त संदेश दिया और समाज में समानता, भाईचारा, अहिंसा की भावना को बढ़ावा मिला। ●सर्वोदय की भावना के फलस्वरुप ग्राम समाज को एकजुट करने की प्रक्रिया शुरू हुई ।

अस्पृश्यता के विरोध और स्त्री सशक्तिकरण की दिशा में भी यह आंदोलन प्रभावी रहा।

2. आर्थिक क्षेत्र में प्रभाव- भूदान और ग्रामदान आंदोलन ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भूमि, धन और संसाधनों के समान वितरण का विचार प्रस्तुत किया।

ट्रस्टीशिप सिद्धांत ने पूंजीवाद और साम्यवाद दोनों का विकल्प दिया। ●खादी, ग्रामोद्योग और स्वावलंबन के माध्यम से ग्रामीण रोजगार के अवसर बढ़े।

इससे लोक आधारित अर्थव्यवस्था(people centered economy) की अवधारणा का विकास हुआ।

3. राजनीतिक क्षेत्र में प्रभाव

- सर्वोदय आंदोलन ने राजनीति को सेवा का माध्यम बताया,सत्ता की नहीं।
- सर्वोदय के प्रभाव से ही ग्राम स्वराज्य और पंचायती राज्य की अवधारणा विकसित हुई।
- भारत के लोकतांत्रिक ढांचे में नैतिकता और जनशक्ति का समावेश हुआ ।

4.शैक्षिक क्षेत्र में प्रभाव

- नई तालीम (बेसिक एजुकेशन) का विकास भी सर्वोदय के फलस्वरुप हुआ।
- इस शिक्षा प्रणाली ने 'श्रम को सम्मान' और 'जीवनोपयोगी ज्ञान' पर बल दिया।
- शिक्षा को चरित्र निर्माण और आत्मनिर्भरता से जोड़ा गया।
- आज की नई शिक्षा नीति पर भी सर्वोदय का प्रभाव दिखाई देता है।

5. अंतर्राष्ट्रीय और पर्यावरणीय प्रभाव-

- सर्वोदय का विचार धीरे-धीरे विश्व स्तर पर अहिंसा, शांति और सतत विकास का प्रतीक बना ।
- वसुधैव कुटुम्बकम की भावना के साथ सर्वोदय आज वैश्विक एकता का संदेश देता है।
- सतत ग्राम विकास,पर्यावरण संरक्षण और ग्रामीण पुनर्निर्माण में सर्वोदय की सोच दिखाई देती है।

सर्वोदय आंदोलन का प्रभाव केवल भारत तक सीमित नहीं था वरन् उसने विश्व के अनेक देशों में सामाजिक न्याय, ग्राम स्वराज्य और अहिंसा पर आधारित वैकल्पिक विकास मॉडलों को प्रेरित किया। सर्वोदय दर्शन ने ब्रिटेन,दक्षिण अफ्रीका और अमेरिका जैसे देशों के सामाजिक चिंतकों को गहराई से प्रभावित किया।श्रीलंका में डॉक्टर ए. टी.अरियारत्ने ने सर्वोदय श्रमदान आंदोलन की स्थापना की,जो एशिया का सबसे बड़ा स्वयंसेवी संगठन बन गया और ग्रामीण विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य तथा और आत्मनिर्भरता के कार्यक्रमों के लिए प्रसिद्ध हुआ।

इसी प्रकार जापान में गांधी पीस फाउंडेशन और अमेरिका में सर्वोदय यू.एस.ए. जैसी संस्थाओं ने गांधी के विचारों को वैश्विक स्तर पर प्रसारित किया। अफ्रीका,यूरोप और लैटिन अमेरिका के कई हिस्सों में सर्वोदय की 'सभी के कल्याण' की भावना ने नॉन वियोलैंस मूवमेंट्स और कम्युनिटी सेल्फ हेल्प इनीशिएटिव को प्रेरणा दी। रस्किन, टॉलस्टॉय, और गांधी की विचारधाराओं से प्रभावित होकर विश्व स्तर पर सर्वोदय एक वैश्विक मानवतावादी आंदोलन के रूप में उभरा,जिसने यह सिद्ध किया की शांति, सहयोग औरआत्मनिर्भरता ही मानव समाज के स्थाई विकास की नींव है।

वर्तमान में जहां हम बसुधैव कुटुंबकम और प्राचीन ज्ञान परंपराओं को बनाए रखने की बात करते हैं वहां गांधी जी के सर्वोदय दर्शन का पालन करना अति महत्वपूर्ण हो जाता है। वसुधैव कुटुंबकम भारतीय दर्शन का अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत है ,जो गांधी जी के सर्वोदय दर्शन और आधुनिक मानव का आधार बनता है। इसका शाब्दिक अर्थ है-" पूरी धरती एक परिवार है।" यह सिद्धांत कहता है कि सारी पृथ्वी पर बसने वाले सभी जीव, मनुष्य,पशु, पक्षी एक ही परिवार के सदस्य हैं; इसलिए किसी भी जाति, धर्म, भाषा या राष्ट्र के प्रति भेदभाव अनुचित है । यह सिद्धांत बताता है कि व्यक्ति को केवल अपने परिवार या समाज तक सीमित न रहकर संपूर्ण मानवता के कल्याण के लिए कल्याण करना चाहिए ।यह सिद्धांत अद्वैत वेदांत की उस भावना को प्रकट करता है जिसमें सभी में एक ही परमात्मा का अंश माना गया है। जब सभी में एक ही आत्मा होती है तो किसी के साथ भेदभाव का प्रश्न नहीं उठता। महात्मा गांधी ने वसुधैव कुटुंबकम की भावना को अपने सर्वोदय (सबका कल्याण) सिद्धांत में रूपांतरित किया।उनके अनुसार- ,"दुनिया में जब तक एक भी व्यक्ति दुखी है, मेरा सुख अधूरा है।,"

आज के वैश्वीकरण और विश्व शान्ति के युग में यह विचार बहुत ही प्रासंगिक है । यह सांप्रदायिक सौहार्द, अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और पर्यावरणीय संतुलन की प्रेरणा देता है। भारत की G-20 अध्यक्षता (2023) का सूत्र वाक्य भी यही था- "वन अर्थ,वन फैमिली,वन फ्यूचर"जो वसुधैव कुटुम्बकम का आधुनिक अनुवाद है।

महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं को वर्तमान में जीवित रखने का एक प्रभावी माध्यम है। महात्मा गांधी जी के सर्वोदय दर्शन की जड़े भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिक चिंतन में गहराई से निहित हैं। प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य था- सत्य की खोज, आत्म साक्षात्कार और लोक कल्याण। यही भाव गांधी जी के सर्वोदय में भी दिखाई देता है। वह मानते थे कि सच्चा धर्म वही है जो मानवता की सेवा में प्रकट हो। इसी दृष्टि से गांधी जी ने प्राचीन 'निष्काम कर्मयोग',अहिंसा और वसुधैव कुटुम्बकम जैसे सिद्धांतों को सामाजिक जीवन में व्यावहारिक रूप दिया। जहां प्राचीन परंपरा आध्यात्मिक मोक्ष पर बल देती है वहीं गांधी जी ने उसी आत्मज्ञान को लोकसंग्रह और सामाजिक उत्थान का आधार बनाया। उनका कहना था, "मोक्ष का मार्ग सेवा से होकर जाता है।"इसी प्रकार सर्वोदय केवल प्राचीन विचारों की पुनरावृत्ति नहीं वरन् उनका आधुनिक पुनर्जागरण है। आज के युग में जब शिक्षा, विज्ञान और तकनीक के बीच नैतिकता व करुणा कम होती जा रही है, सर्वोदय उन आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों को पुनर्जीवित करता है; जो भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल थे जैसे सत्य,अहिंसा,आत्म संयम और सबका कल्याण।

महात्मा गांधी का सर्वोदय दर्शन अर्थात सभी का कल्याण आज के भारत के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। गांधीजी का विश्वास था कि राष्ट्र की सच्ची प्रगति केवल आर्थिक विकास से नहीं वरन् नैतिक, सामाजिक,और मानवीय मूल्यों के उत्थान से होती है। वर्तमान भारत जो आत्मनिर्भरता, समावेशी विकास और सतत प्रगति की दिशा में आगे बढ़ रहा है उसमें सर्वोदय के सिद्धांत सर्वाधिक रूप से समाहित हैं।नए भारत की अवधारणा का मुख्य उद्देश्य है- "सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास" जो सीधे-सीधे गांधीजी के सर्वोदय सिद्धांत से प्रेरित है। गांधीजी के ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप,और अहिंसा के सिद्धांत आज भी ग्रामीण सशक्तिकरण, सामाजिक न्याय और पर्यावरणीय संतुलन की नीतियों में परिलक्षित होते हैं। आत्मनिर्भर भारत अभियान भी गांधीजी की उस कल्पना को साकार करता है जिसमें हर गांव, हर व्यक्ति आर्थिक रूप से स्वावलंबी बने और किसी पर निर्भर ना रहे। आधुनिक भारत में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, हिंसा और असमानता के युग में सर्वोदय की भावना लोगों को सहयोग,करुणा और नैतिकता की ओर लौटने का संदेश देती है।यह विचार हमें यह याद दिलाता है कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति केवल विज्ञान, उद्योग या राजनीति में नहीं बल्कि जनसाधारण के नैतिक उत्थान और सामूहिक कल्याण में निहित है।

निष्कर्ष

गांधी जी का सर्वोदय दर्शन नए भारत के निर्माण के लिए नैतिक मार्गदर्शक और मानवीय आधार के रूप में कार्य करता है; जो हमें आत्मनिर्भर,न्यायपूर्ण और करुणामय समाज की ओर अग्रसर करता है। यह उस नैतिक दृष्टि का प्रतिफल है जिसमें व्यक्ति और समाज दोनों की मुक्ति का मार्ग निहित है ।यह एक ऐसा व्यावहारिक दर्शन है जिसे अपनाकर विश्व में शांति, सहयोग और न्याय की स्थापना संभव है। गांधी जी का सर्वोदय दर्शन एक ऐसा यथार्थवादी यूटोपिया है जो न केवल स्वप्न दिखाता है वरन् उसे साकार भी करता है।सर्वोदय आज भी एक जीवित विचारधारा है जो बताती है कि "वास्तविक यूटोपिया वही है जो सबके लिए कल्याणकारी हो।"

संदर्भ

1. गांधी, मोहनदास करमचन्द. सर्वोदय (Unto This Last का अनुवाद) — नवा जीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1908।
2. गांधी, मोहनदास करमचन्द. हिन्द स्वराज या भारतीय स्वराज — नवा जीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1909।
3. मिश्रा, रघुवर दयाल. गांधी और सर्वोदय दर्शन — राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985।
4. वर्मा, रामनाथ. सर्वोदय और आधुनिक भारत — भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, 1992।
5. गुप्ता, गिरिजा शंकर. गांधीवादी समाजवाद और सर्वोदय — प्रकाशन संस्थान, लखनऊ, 2001
6. महात्मा गांधी, सर्वोदय या सबका कल्याण, नवजीवन प्रकाशन गृह, अहमदाबाद, 1954
7. विनोबा भावे, सर्वोदय का सार, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1956।
8. विश्वनाथ प्रसाद वर्मा, महात्मा गांधी और सर्वोदय का राजनीतिक दर्शन, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल, आगरा, 1962
9. डॉ. रामजी सिंह — गांधी और सर्वोदय दर्शन, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद, 1982।
10. नारायण, जयप्रकाश — सर्वोदय और सम्पूर्ण क्रांति, सार्वसेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी, 1977।
11. डॉ. राधाकृष्णन — गांधी का दर्शन और सर्वोदय विचार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1985।
12. आचार्य विनोबा भावे — सर्वोदय का मार्ग, सार्वसेवा संघ प्रकाशन, 1960।
13. गांधी, एम.के. सर्वोदय (सभी का कल्याण) — नवजीवन पब्लिशिंग हाउस, अहमदाबाद, 1954.

14. गांधी, एम.के. — रचनात्मक कार्यक्रम: इसका अर्थ और स्थान, 1941.

15. गांधी, एम.के. — सर्वोदय (सभी का कल्याण), नवजीवन पब्लिशिंग, 1951.